**Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,**
***Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2017: 5.068, www.srjis.com***
*PEER REVIEWED JOURNAL, AUG-SEPT 2018, VOL- 6/29*

# मिथिला एंव मैथिलों में प्रचलित संस्कार गीत एंव उनका महत्व

**नीलम कुमारी , Ph. D.**
*सहायक प्राध्यापक*

***Abstract***

*इस लेख में संस्कार , संस्कारोत्सव मैथिली लोकगीत एंव मैथिली संस्कार गीतों का चित्रण उदाहरणों के संग किया गया है | हर चित्रण की अलग शैली तथा हर शैली एक अलग पावनोत्सव या त्योहार से जुडी हुई है जो पारंपरिक जीवन शैली में रची बसी है तथा मिथिला की लोक-संस्कृति को अति श्रेष्ठ बनाती है|*

*Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com*

मिथिला आदि काल से अपनी सांस्कृतिक परंपरा के लिए प्रसिद्ध रहा है| जनक, याग्यवात्क्य, पक्षधर, आपाची, मंडन, उदयन, चंदा झा, विद्यापति, रामधारी सिंह 'दिनकर' आदि अनेको विश्वप्रसिद्ध दार्शनिक एंव साहित्यिक कलाकारों ने अपनी विद्वत्ता से विश्व को आलोकित किया है| उत्तर में नेपाल, दक्षिण में पतित पावनी गंगा, पूर्व में कोशिकी तथा पश्चिम में गंडक से आवृत इस भू भाग को अपनी संस्कृति, परंपरा एंव मानव-मात्र की कल्याण भावना की वजह से सर्वत्र पूजा जाता है|

- पुराणों से भी मिथिला की श्रेष्ठता के प्रमाण मिलते है –

  देशेषु मिथिला श्रेष्ठा गद्दादी भोशिता भुवि: |
  द्विजेषु मिथिल: श्रेष्ठ: मैथिलेषु च क्षोत्रिय:

- मैथिली के सर्वाधिक वृहद और प्राचीन लोकगाथा लोरिकाइन में बताया गया है-

  कंठ में बसिहड सरसती माता, कोकिला सन दिहडभास |
  रण मे बसिहड दुर्गा चंडी, खंडा के बिसवास ||
  पूरब जे पुरनियां पुजलों, पच्छिम रे बिहार
  उत्तर जे नेपाल पुजलिअइ , दक्षिण गंगाधार ||
  रौता जे तिल्केषर पुजलौं, झाडी बैजनाथ |
  भौरे उठि कें हाथ उठौलिअइ , दिनकर दीनानाथ ||

मिथिला का उल्लेख महाभारत, रामायण , यहाँ तक कीबौदध ग्रंथ में भी हुआ है |

मानव जीवन में संस्कार का अत्यंत महत्व है| संस्कार का अर्थ है सुधार, शोधन एंव शुद्धि | संस्कार जीवन को अक्षुण्ण महत्व एंव पवित्रता प्रदान करते है | भारतीय सनातन धर्म एंव संस्कृतिक अमरता में संस्कार

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है | संस्कार का संबंध शुद्धि हेतु कराइ हुई क्रिया एंव मनुष्य के शाररिक, मानसिक, बौद्धिक, अध्यात्मिक एंव सर्वोन्नती के लिए किये गए अनुष्ठान से है|

इससे पूर्व जन्म के शुभ, अशुभ, पाप तथा दोष का परिमार्जन होता है तथा इसी से सद्गुणों का जन्म भी होता है | धर्म संस्कारो एंव शास्त्रों के अनुसार हिन्दू समाज में षोडश संस्कार प्रचलित एंव लोकप्रिय है जो क्रमशः गर्भाधान, पुंसवन , सीमंतोन्नयन , जातकर्म , नामकरण , निष्क्रमण, अन्नप्राशन , चूडाकरण , कर्णवेध , विद्यारंभ, उपनयन , वेदारंभ , केशांत , विवाह अंत्येष्ठी आदि हैं | ऐसे ही विविध संस्करोत्स्व के अवसर पर गए जाने वाले गीतों को संस्कार गीत कहते हैं|

लोकसाहित्य मैथिली साहित्य की एक अमूल्य निधि है | मैथिली साहित्य में इसका अनुपम योगदान है | इसके अंतर्गत लोकगीत की महत्ता सर्वविदित है जिसमे संस्कार गीत की एक अक्षुण्ण परंपरा रही है | उदाहरणस्वरूप – सोहर, क्षठिहार, मुंडन, उपनयन, विवाहद्विरागमन, परिछन , गोरलग्गी , तुषारी , समदाओन, संस्करोत्सव के विविध अवसरों पर विविध गीत, पितर के गीत आदि |

कुछ गीतों के प्रकार एंव वर्णन उदाहरण के साथ निम्नलिखित है |

1) जन्म के गीत / सोहर -> यह तीन खंड में विभाजित है –

प्रथम खंड -> पुत्र की कामना या जन्मोत्सव विषय के सामान्य व्यवहार व् लोकाचार से संबंधित गीत |

केदली के वन अति हरियर , आओरो अत सुन्नर रे ,
ललना , उमकि झुमकी बन बरिसै, दुइ जने भजए रे ||

द्वितीय खंड -> इस खंड में पौराणिक , वैदिक , देवी देवताओ से समन्धित गीत गए जाते है |

पालेंगा सुतल कोसिला रानी, मेघ सं अर्जी करे रे |
ललना , केदली अन जुनी बरसिए , कि रामचंदर भिजल रे ||

त्रितय खंड -> इन गीतों में राम , कृष्ण आदि पौराणिक चरित्रों का उल्लेख किया जाता है |

किलकार आँगन सोहावन, आओर सोहावन रे |
ललना केओ लेलहि अवतार , चलहु सखी देखन रे ||

2) छठिहार -> जन्मके छठे दिन बालक को शुभाशीष देते हुए यह गीत गाए जाते है |

3) मुंडन -> मुंडन संस्कार में बच्चे के बाल 4-8 साल की उम्र में उतरवाए जाते है और कई गीत गए जाते कई जैसे

कओन बाबा छुरिया गढाओल, आओर मढाओल हे |

.....

.....

हजमा धीरे-धीरे कटिहे बौआक केश , कि बौआ

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

बाद दुलारू छेक रे ||

4) उपनयन ->उपनयन संस्कार मिथिला में उच्च वर्ग में देखा जाता है जैसे मिथिल ब्राह्मण आदि| हरेकविधि-व्यवहार से संबंधित अलग-अलग गीत है जैसे सझा, उबटन, चरकट्टी, बंसकट्टी, कुमरन, आम-महु-विवाह, उपनयन, भीखहर, चूमाओन, घिउठारी एंव बिलौकी सबके अलग-अलग गीत है |

5) शादी (विवाह) ->शादी के अलग-अलग विधि-विधान के भी अलग-अलग गीत है जैसे कुमार लगन, आम-मह बिआह, मात्रका पूजा, नहछू , परिछन, नकधरी , भावर, ओठंगर, लावा छिटाई, सिंदूरदान, चुमावन, देहरी-धेंकाड, बेटा-परिछन गोसाउनिक गीत, गौडीक गीत, बिसहराक गीत हेसी दगाई द्विरागमन आदि |

उदाहरण ->

पाहुन सिंदुर लिप हाथ , सर सुपारी

.....

.....

आइ पूरल मनोरथ आनंदित होय लय

अन्य उत्सवों एंव पावन त्योहारों में भी लोकगीत अत्यंत सुखद मनोवृति से गाए जाते है जो कि अत्यंत कर्णप्रिय लगते है | मैथिली लोकसाहित्य में संस्कार गीत की अभिन्न परंपरा रही है | लोकगीत की गौरवमय संस्कृति सिर्फ मिथिला नही बल्कि सम्पूर्ण विश्व क लिए एक प्रकाश स्तम्भ रूप स्थापित है |

**सन्दर्भ सूची (Reference) :**

*History of Maithili Literature – Vol I & II, Dr. Jaykant Mishra, sahitya Academy, Delhi, 1976*

*मैथिली साहित्यक इतिहास - डा० दुर्गानाथ झा 'श्रीश', यरभंगा – 2002*

*मैथिली लोकगीत - डा० पूर्णानंद दास*

*मैथिली में मांगलिक लोकगीत - डा० कुमारी सीता शर्मा , 1971*

*मैथिली लोकगीत - डा० अनिमा सिंह , 1966*

*मैथिली लोकगीत में समाज चित्रण - डा० इलारानी सिंह , 1972*

*मैथिली संस्कार गीत – तारिणि देवी , उर्वशी प्रकाशन , पटना |*

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*